आलस्य और अलबेलापन - 40

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ जब सब कुछ तेरा कह दिया तो कोई भी तन, मन या धन, वस्तु, सिर्फ धन नहीं लेकिन वस्तु भी धन है। वस्तु बनती किससे है? **धन से ही बनती है ना, तो कोई भी वस्तु, कोई भी स्थूल धन, कोई भी मन से संकल्प और तन से व्यर्थ कर्म करना या व्यर्थ समय गवाना तन द्वारा, यह भी वेस्ट में गिना जायेगा। तो ऑनेस्ट तन को भी व्यर्थ के तरफ नहीं लगाते। संकल्प को भी वेस्ट में नहीं लगाते।**

➳ _ ➳ **जहाँ भी रहते हो, चाहे प्रवृत्ति वाले हैं, चाहे सेन्टर वाले हैं, चाहे मधुबन वाले हैं, सबका तन-मन-धन बाप का है वा प्रवृत्ति वाले समझते हैं कि हम समर्पण तो है नहीं तो मेरा ही है। नहीं। यह तो बाप की अमानत है। तो ऑनेस्टी अर्थात् अमानत में कभी भी ख्यानत नहीं करें। वेस्ट करना अर्थात् अमानत में ख्यानत करना। ऑनेस्ट की निशानी वह अमानत में कभी भी ख्यानत कर नहीं सकता। छोटी सी वस्तु को भी वेस्ट नहीं करेगा।**

➳ _ ➳ **कई बार अपने बुद्धि के अलबेलेपन के कारण वा शरीर द्वारा कार्य में अलबेलेपन के कारण छोटी-छोटी वस्तु वेस्ट भी हो जाती है।** फिर यह सोचते हैं कि मैंने यह जानबूझ कर नहीं किया, तो हो गया अर्थात् अलबेलापन। **चाहे बुद्धि का हो, चाहे शरीर के मेहनत का अलबेलापन हो, दोनों प्रकार का अलबेलापन वेस्ट कर देता है। तो वेस्ट नहीं करना है। एक से दस गुना बढ़ाना है, न कि वेस्ट करना है। जिसको बापदादा सदा एक स्लोगन में कहते हैं - कम खर्च बाला नशीन। ये है बढ़ाना और वो है गेंवाना। ऑनेस्ट अर्थात् तन मन और धन को सदा सफल करने वाला। यह है ऑनेस्ट आत्मा की निशानी।**

➳ _ ➳ **तपस्वी अर्थात् यह सब ऑनेस्टी की विशेषतायें हर कर्म में प्रयोग में आवे।** ऐसे नहीं कि समाया हुआ तो सब हैं, जानते भी सब हैं। लेकिन नहीं, **तपस्या, योग का अर्थ ही है प्रयोग में लाना। अगर इन विशेषताओं को प्रयोग में नहीं लाते तो प्रयोगी नहीं, तो योगी भी नहीं।** **यह सब खज़ाने बापदादा ने प्रयोग करने के लिए दिये हैं। और जितना प्रयोगी बनेंगे, तो प्रयोगी की निशानी है प्रगति। अगर प्रगति नहीं होती है तो प्रयोगी नहीं।**

➳ _ ➳ **कई आत्मायें ऐसे अपने अन्दर समझती भी हैं कि न आगे बढ़ रहे हैं, न पीछे हट रहे हैं। जैसे हैं, वैसे ही हैं। और कई ऐसे भी कहते हैं कि शुरु में बहुत अच्छे थे बहुत नशा था अभी नशा कम हो गया है तो प्रगति हुई या क्या हुआ? उड़ती कला हुई या ठहरती कला हुई तो प्रयोगी बनो। ऑनेस्टी का अर्थ ही है प्रगति करने वाला प्रयोगी।** ऐसे प्रयोगी बने हो या अन्दर समाकर रखते होखज़ाना - अन्दर ही रहे? ऐसे ऑनेस्ट हो? **(18.12.1991)**

➢ **HONESTY**

➳_ ➳ तपस्या की एक परिभाषा है

→ **HONESTY**

- HONESTY की सबसे पहली परिभाषा है
  - **HONEST अर्थात श्रीमत पर चलने वाले**

➳_ ➳ **ब्राह्मण जन्म होते ही बापदादा ने हर ब्राह्मण की बुध्धि में श्रीमत भर दी है,**

→ और यह जो श्रीमत है वो हमे

- योगी जीवन में
- ब्राह्मण जीवन में
  - स्वतः चलाती है

➢➢ NO.1 HONESTY

➳_ ➳ **उनकी बुध्धि में श्रीमत एकदम सरल और स्पष्ट रुप से दिखाई देगी**

→ और मार्ग भी सहज होगा

- वो श्रीमत में मनमत और परमत मिक्स नही करते

➢➢ NO.2 HONESTY

➳_ ➳ **वो कभी टेढ़े बाके रास्ते पर चले जाते है**

→ श्रीमत क विरुद्ध इधर उधर भटक जाते है

- क्युकी उनकी बुध्धि में श्रीमत स्पष्ट नही, धुंधली सी है
  - वो श्रीमत में मनमत और परमत मिक्स करते
  - इसलिए रास्ते से भटक जाते है
  - और उन्हें रास्ता मुश्किल लगने लगता है

➳_ ➳ जो भटक गये है, उनके लिये पुरुषार्थ का मार्ग यह एक ही है

→ उन्हें घुम फिर कर वापस आना यही पर है

- हट्टी तो श्रीमत पर चलने की यह एक ही है
  - बाकी सब तो गलियाँ है

➳_ ➳ **HONEST अर्थात जो भी खजाने मिले हुये है, उन्हें वेस्ट न करना, कार्य में लगाना**

→ ऑनेस्ट आत्मा कभी भी **समय को वेस्ट** नही करेगी

- 1 सेकंड गवाना अर्थात 1 वर्ष से भी ज्यादा गवा दिया

➳_ ➳ **HONEST अर्थात हर खजाने को / हर चीज को सफल करना**

➳_ ➳ **HONEST अर्थात हर खजाने को वेस्ट न जाने देना**

➳_ ➳ **HONEST अर्थात खजाने को स्वयं के प्रति भी और दुसरो के प्रति कार्य में लगायेंगे**

→ उसमे यह सारे खजाने आ जाते है

- जिसे हमे वेस्ट नही करना है
  - संकल्प का खजाना

- ▶ समय का खजाना
- ▶ तन मन धन का खजाना
- ▶ हर वस्तु का खजाना

→ ऑनेस्ट आत्मा कभी भी अपने **संकल्पों को वेस्ट** नही करेगी

- ■ सोच ही रहे है, संकल्प पर स्टॉप ही नही होता
  - ▶ बस व्यर्थ का सोचते ही रहते है, सोचते ही रहते है
  - ▶ वापस आने का नाम ही नही लेंगे,
  - ▶ इतनी व्यर्थ संकल्पों की गति फ़ास्ट होगी

→ ऑनेस्ट आत्मा कभी भी **तन / शरीर द्वारा व्यर्थ कर्म** नही करेगी

- ■ इस शरीर में रहकर हमे सम्पूर्ण बनना है
- ■ यह श्रेष्ठतम शरीर हमे मिला हुआ है
  - ▶ इसकी हमे बहुत सम्भाल करनी है
  - ▶ इसको भोग विलासिता में डूबा हुआ इसे नही रखना है

➳_ ➳ **श्रेष्ठ तपस्या के लिये शरीर पर नियन्त्रण सबसे जरूरी है**

→ शरीर को हमे अपने वश में रखना है

- ■ चाहे वो भूख हो
- ■ चाहे वो प्यास हो
- ■ चाहे निंद्रा हो
- ■ क्युकी यह देह ही चंचलता उत्पन करता है
- ■ शरीर भी व्यर्थ की तरफ न जाय इसके लिये हमे इन सभी पर अटेंशन देना है
  - ▶ देह की वृति
  - ▶ देह का भान
  - ▶ देह का अहंकार
  - ▶ देह की बाते
  - ▶ देह की वासनाये
  - ▶ देह की इरछाये
  - ▶ देह की आवश्यकताये

➳_ ➳ धन भी हमे वेस्ट की तरफ नही

- ■ श्रेष्ठ की तरफ लगाना है

➳_ ➳ **HONEST अर्थात इमानदार और वफादार**

➳_ ➳ **HONEST अर्थात कभी अमानत में खयानत न करे**

→ **वेस्ट करना अर्थात अमानत में खयानत करना**

- ■ छोटी सी वस्तु को भी वह कभी वेस्ट नही करेगा
- ■ उसे यज्ञ की एक एक वस्तु का भी बहुत मूल्य होगा

■ जो भी भोजन हम ले रहे, वो भी उतना ही ले जो हमे पता है, की यह हम खा सकेंगे

▶ लालच के मारे पता नही मिलेगी बाद में की नही मिलेगी

▶ **ऐसा सोच के ज्यादा नहीं ले लेना है, की बाद में फेकना पड़े**

▶ यज्ञ की कोई भी चीज को वेस्ट नही करना है

▶ चाहे हमे पता है की यह भोजन हमारा बहुत प्रिय है,

▶ फिर भी भोजन हमेशा कम ही लेना है

▶ जरूरत पड़े तप भले दुबारा लो

▶ पर वेस्ट एक दाना भी नही जाने देना है

▶ आगे वेस्ट करेंगे तो उसका हम पर बहुत भारी बोज चडेगा

→ कोई भी छोटी मोटी स्थूल चीज भी वेस्ट नही करना है

■ चाहे वो दूध हो

■ पानी हो

■ चाय हो

■ भोजन हो

■ ELECTRICITY हो

■ LIFT हो

■ कागज़ हो

■ पेन / पेंसिल हो

■ INTERNET हो

▶ यह सारी सूक्ष्म सूक्ष्म बातो पर अटेंशन देना है

▶ और चेक करना है की,

▶ हम कहा क्या वेस्ट कर रहे है??

→ बाबा तो संकल्प भी वेस्ट न करने का कह रहे है

■ वह तो बहुत बहुत सूक्ष्म है

▶ पहले यह सब स्थूल वेस्ट करना बंध करेंगे

▶ तब फिर सूक्ष्म वेस्ट करने से बच सकेंगे

➳_ ➳ **जो वेस्ट को बेस्ट बनाते है, बाबा कहते है वो मेरे HONEST बच्चे है**

→ कम से कम खर्च में प्राप्ति ज्यादा से ज्यादा हो

■ हमे ऐसा बनना है

➳_ ➳ जो भी काम करते हो उसे पहले यह सोचो की और किस विधि से यह काम किया जा सकता है

→ जिसमे कम से कम खर्च हो

➢➢ प्रयोगी

➳_ ➳ प्रयोगी के 2 अर्थ

→ 1..**EXPERIMENT करना (प्रयोग करना)**

→ 2..**UTILIZE करना (कार्य में लगाना)**

- अगर इस विशेषता को प्रयोग में नही लाते हो
  - तो प्रयोगी नही कहा जायेगा
  - अगर प्रयोगी नही बने हो, तो प्रगति भी नही होगी

➳_ ➳ **HONEST अर्थात हर खजाने को प्रयोग करना**

➳_ ➳ **HONEST अर्थात हर खजाने को प्रयोग करने वाले प्रयोगी बनना**

➳_ ➳ **ऑनेस्टी का अर्थ ही है प्रगति करने वाला प्रयोगी।**